ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 66 | अंक 5 | जनवरी 2019 | पौष 2075 | वार्षिक मूल्य 150 रु०

सुभाषचन्द्र बोस

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुन: भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

-व्यवस्थापक

वर्ष :66 **अंक : 5**
जनवरी 2019 **विक्रमाब्द 2075**
दयानन्दाब्द 195 **कलिसंवत् 5118**
सृष्टिसंवत्-1,96,08,53,118

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक विनय	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का विदेश....	4
4.	आचार्य वेदव्रत शास्त्री कर्मठ विद्वान्..	9
5.	बेवकूफ	10
6.	गीता जयन्ती के नाम पर फिर वही....	15
7.	103वां वार्षिक महोत्सव	17
8.	हमारा कर्त्तव्य	18
9.	''सुख दु:ख'' गुण जीव है.....	20
10.	5वीं आर्य वेदप्रचार यात्रा सफलतापूर्वक..	23

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वैदिक विनय

अकामो धीरो अमृतः स्वयंभूः,
रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः।
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योः,
आत्मानं धीरमजरं युवानम्।।

अथर्व० 10.8.44।।

विनय

हे मृत्यु-भय से तर जाना चाहनेवाले गुमुक्षु! तू उस एक सर्वव्यापक तत्त्व को देख जो कि सर्वथा 'अकाम' है जिस में किसी प्रकार की भी कोई कामना नही; अतएव जो कभी भी चलायमान नहीं होता, सदा सर्वथा धीर है; जो कि कभी न मरेगा और न कभी पैदा हुवा है; जो स्वयं ही अपने आधार से सदा विद्यमान है, जिसे कभी किसी अन्य ने जन्म नहीं दिया, जिस की सत्ता किसी अन्य के आश्रित नहीं अतएव जिसकी अमृत सत्ता कभी खण्डित भी नहीं हो सकती, विनाश को नहीं प्राप्त हो सकती; जो कि आनन्दरस से सर्वथा परिपूर्ण है, हम लोग आनन्ददायक भोजन को यथेष्ट खाकर जैसे कुछ देर के लिये छके हुवे, परितृप्ति की अवस्था में रहते हैं वैसी ही आप्यायित अवस्था में जो सदा, त्रिकाल में रहता है, जो कि आप्तकाम है; जिसमें किसी प्रकार की भी कमी, न्यूनता, अपेक्षा व आवश्यकता नहीं है, जो सर्वथा परिपूर्ण है, अखण्ड है, अतएव जो अकाम हुवा है उसे देख, उस एक तत्त्व को देख; उसे पहिचान। उस तत्त्व को अपने अन्दर खोज, अपने अन्दर पहिचान। वह दीखता है कि नहीं? क्या तू अपने आपको वैसा अजर, अमर तत्त्व नहीं देखता? जब तू अपने आपको अचलायमान, कभी बुड्ढा न होनेवाला, एकरस, नित्य, हमेशा एक समान युवा (जवान) देख लेगा तभी-केवल तभी-मृत्युभय से पार होवेगा। उस सच्चे आत्म-स्वरूप को देख लेने के बाद तू शरीर नहीं रहेगा। तब तू वही धीर, अजर, अमर, तत्त्व होजायगा। तब मृत्यु कहां रहेगी? तब तो जीने मरने में कोई भेद नहीं रहता, जीवन मरण दोनों ही जीवन होजाते हैं, एक नये प्रकार का नित्य जीवन हो जाते हैं। हज़ारों मृत्युओं के बीच में भी आत्मा अपनी अमरता को घोषित करता है। परन्तु जब तक इस आत्म-स्वरूप का साक्षात् न होजाय, मनुष्य अपने देह से बिल्कुल जुदा अपने आपको अजर अमर न देख ले, तब तक मृत्यु-भय नहीं जा सकता। मृत्यु से निर्भय होने का संसार में अन्य कोई दूसरा उपाय नहीं। जब तक मनुष्य ने यह आत्म-स्वरूप न पा लिया हो तब तक वह चाहे जितना विद्वान्, हज़ारों ग्रन्थों का पढ़ने पढ़ाने और बनानेवाला होजाय, उपदेष्टा होजाय पर वह उसी तरह मृत्यु का मारा हुवा फिरता है जैसे कि एक चींटी या एक खटमल मरण-त्रास से डरकर भागती है। देखो वह अखण्ड, एकरस, सर्वथा अकाम, अचल, अमर, अभय नित्यतत्त्व। यदि मृत्यु को जीतना है तो देखो:-यह धीर, अजर, अमृत, अपना आत्मा। तब मृत्यु कहां है? मरना कैसा! अरे, मरना कैसा!!

शब्दार्थ-

जो (**अकामः**) सर्वथा कामनारहित (**धीरः**) धीर (**अमृतः**) कभी न मरनेवाला (**स्वयंभूः**) स्वयं अपने आधार से सदा विद्यमान (**रसेन तृप्तः**) आनन्दरस से परितृप्त (**कुतश्चन न ऊनः**) तथा किसी प्रकार की कोई भी न्यूनता न रखनेवाला है। (**तं**) उस (**धीरं, अजरं, युवानं, आत्मानं एव विद्वान्**) धीर, अजर, सदा तरुण को आत्मस्वरूप जानकर ही मनुष्य (**मृत्योः न बिभाय**) मृत्यु से नहीं डरता-मृत्यु से निर्भय हो जाता है।

सम्पादकीय

ओ३म्

परिवर्तनशील संसार

जैसे जड़ प्रकृति में परिवर्तन होता रहता है, वह एक रस नहीं रहती वैसे ही मानव की प्रकृति और प्रवृत्ति सदा एक समान नहीं रहती। उसमें समय, स्थान, संगति और ऋतुओं के अनुसार भी परिवर्तन होता रहता है। अभी गत दिनों भारत के पांच राज्यों में विधानसभाओं के चुनाव हुए हैं, इनमें जनता की मानसिक प्रवृत्ति के परिवर्तन की झलक मिलती है। जब जनता अपने शासकों से अपनी यथेष्ट मांग पूरी होते नहीं देखती तो उन्हें बदलकर दूसरे शासकों से अभीष्ट फलप्राप्ति की चेष्टा करती है। इस परिवर्तन से भी जब लोग सन्तुष्ट नहीं हो पाते तो पुनः पिष्टपेषण का यत्न करते हैं। इन चुनावों ने यह सिद्ध कर दिया है कि जनता की उचित मांगों पर ध्यान न देने से सत्ता सुख छिन भी सकता है। परन्तु जो लोग विजित हुए हैं उन्हें अभिमान में आकर यह नहीं सोच लेना चाहिए कि हम बहुत श्रेष्ठ व्यक्ति हैं, इसीलिए जनता ने हमें चुना है। परन्तु इसमें कारण यह है कि पराजित होने वाले लोगों की सरकार ने जनता को सन्तुष्ट नहीं किया, इसीलिये यह परिणाम सामने आया है। यदि जीते हुए लोगों की सरकार भी जनता की उपेक्षा करेगी तो इतिहास पुनः दोहराया जा सकता है।

पराजित होने वाले व्यक्तियों को भी हताश न होकर अपने भूतकाल के कर्त्तव्यों पर पुनर्विचार करना चाहिये कि हमने जनता से जो-जो वायदे किये थे, उन्हें पूरा करने में कहां न्यूनता रह गई। उन्हें हताश होकर नहीं बैठना चाहिये।

जनता शासक और शासन का मूल होती है। वह अपने शासकों से यह अपेखा करती है कि वे हमारी मूलभूत आवश्यकताओं और सुख साधनों की पूर्ति करे। परन्तु शासक लोग सत्ता हाथ में आते ही जनता को भूलकर अपनी तथा अपने रिश्तेदारों की भलाई और उन्नति में ही लग जाते हैं तथा दूसरी ओर जिन्होंने वोट नहीं दिये, उन्हें परेशान करने का पूरा प्रयत्न किया करते हैं। कहीं मत-सम्प्रदाय की आड़ लेकर तथा कहीं जाति गोत्र आदि की आड़ लेकर उन्हें सुविधाओं से वंचित करना ही अपना ध्येय बना लेते हैं, यह दूषित मानसिकता है।

यह तो ठीक है प्रत्येक व्यक्ति को प्रसन्न नहीं किया जा सकता, परन्तु जिस जनता ने उन्हें शासनसूत्र प्रदान किया है, उसकी उचित और सर्वजनोपयोगी मांगों की ओर तो ध्यान देना ही चाहिये। यदि यह उचित सुनवाई नहीं होती तो जनता परिवर्तन करने का विवश हो जाती है।

उदाहरण के लिए संकेत कर देता हूं कि गुरुकुल झजजर के भूतपूर्व आचार्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने भारत के प्राचीन इतिहास की तथा विशेषकर हरयाणा के प्राचीन इतिहास की सुरक्षा तथा प्रकाशन हेतु पुरातत्त्व संग्रहालय का निर्माण किया था। सरकार से यह आशा की जाती रही कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता की पोषक मानी जाने वाली यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, वह इस सार्वजनिक उपयोगी कार्य को बढावा देकर पुण्य कमायेगी तथा भारत की

भावी पीढी को अपने प्राचीन गौरव को समझने में सहयोग करेगी। परन्तु यह गुरुकुल प्रत्यक्षत: आर्यसमाज की संस्था है और वेद तथा वैदिक धर्म की उन्नति में सदा सतत प्रयत्नशील रहता है, अत: पौराणिक विचारधारा वाली इन मूर्तिपूजकों की हरयाणा सरकार ने इस गुरुकुल की उचित मांग को स्वीकार नहीं किया। यहां की आर्षपाठविधि को मान्यता न देकर अनार्ष ग्रन्थों और चरित्रहनन करने वाले ग्रन्थों को पढाने वाली संस्थाओं को भरपूर सहायता दे रही है। इससे सरकार का पक्षपात प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर हो रहा है।

इसका दुष्परिणाम यह होगा कि भावी चुनाव में इस सरकार की भी वही अवस्था हो सकती है, जो विगत पांच प्रान्तों के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की हुई है।

कोई भी गृहस्थ व्यक्ति यह नहीं चाहता कि उसकी सन्तान ऐसे ग्रन्थों को पढे जिनमें चरित्र को भ्रष्ट करने की शिक्षा दी हो, परन्तु यह सरकार उन्हीं संस्कृत पाठशालाओं को प्रोत्साहन दे रही है, जहां कोमलमति शुद्ध छात्रों को आचार भ्रष्ट करने वाले ग्रन्थ पढाये जा रहे हैं। इससे भारत का भविष्य सदाचार से विहीन और सत्यमार्ग से विमुख हो जायेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

अत: जनता को भी यह सोचना चाहिये कि ऐसे लोगों से और उनके कार्यों से सावधान रहें जो बालकों को अनुचित मार्ग पर चलने की शिक्षा देते हों।

जिन संस्थाओं में संस्कृत साहित्य के नाम पर कालिदास आदि के अश्लीलता पूर्ण ग्रन्थ पढाये जाते हों, वे संस्थायें सरकार की कृपा पात्र रहती हैं, परन्तु जिन आर्ष परम्परा वाले गुरुकुलों में वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि जीवनोपयोगी ग्रन्थ पढाने के साथ-साथ छात्रों के चरित्र और जीवन निर्माण की शिक्षा दी जाती है उन संस्थाओं के व्यवस्थापक लोग सरकारी नेताओं के पास बार-बार चक्कर काट कर भी झूठे आश्वासन के सिवाय कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाते। फलत: इनकी सहायता जनता के द्वारा ही की जा रही है, इसीलिये ऐसे गुरुकुल जीवित रह रहे हैं।

सारे आर्यजगत् की ओर से सरकार से यह अपेक्षा है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति, संभ्यता और वैदिक परम्परा के संवाहक गुरुकुलों को भी अपने देश का अंग मानकर उन्हें उनके मूलभूत अधिकारों से वंचित न करें क्योंकि सरकार को चलाने में कर के रूप में दिये जाने वाले धन में इनका भी सहयोग रहता है। उस धन का उपयोग प्रत्येक आवश्यक और सर्वजनोपयोगी कार्य में करना चाहिये न कि अपने चहेतों के लिए ही। अन्यथा परिवर्तनशील संसार में एक रस कोई नहीं रहता। इतिहास में दोनों प्रकार के लोगों का वर्णन होता है जो जनता का भला करें उनका और जो पक्षपात और अत्याचार करें उनका भी। समझदार लोगों को यह सोच लेना चाहिये कि वे इतिहास में किस श्रेणी के व्यक्तियों में अपना नाम लिखवाना चाहेंगे। क्योंकि यह इतिहास सैंकड़ों वर्षों तक रहेगा।

–विरजानन्द दैवकरणि
मो० 9416055702

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का विदेश पलायन
(एक रोमांचकारी विवरण)

लेखक :- आनन्द देव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता (संस्कृत) दिल्ली सरकार)

ब्रिटिश सरकार नेताजी को खतरनाक व्यक्ति समझती थी, अत: द्वितीय विश्वयुद्ध छिडते ही 2-7-1940 को सुरक्षा कानून के अन्तर्गत उन्हें बन्दी बना लिया गया। तब नेताजी ने इस गैर कानूनी गिरफ्तारी के विरुद्ध अमारण अनशन शुरू कर दिया। पहले तो सरकार अत्यन्त दृढ रही, किन्तु जब नेताजी का स्वास्थ्य अधिक गिर गया तथा उनके प्राणान्त का भय उत्पन्न हो गया, तो 5-12-1940 को नेता जी को छोड दिया गया और वे अपने पैत्रिक घर में कलकत्ता आगये। तब नेता जी घर के चारों तरफ कठोर पहरा कर दिया गया। 62 गुप्तचर अलग-अलग वेशों में उन पर चौबीस घन्टे निगरानी रखते थे। शिकारी कुत्ते भी वहां दिन रात भोंकते थे। फोर्ट विलियम का किला भी पास ही था। शस्त्रागार भी समीप ही था। अंग्रेज सैनिक भी उस समय कलकत्ता में पहले से भी अधिक थे। इतने कठोर पहरे के बावजूद नेता जी 17-1-1941 को, रात में घर से निकल भागे। श्री उत्तमचन्द। (जिनके घर काबुल में नेता जी ठहरे थे) अपनी पुस्तक ''नेताजी जियाउद्दीन के भेष में'' वृत्तान्त इस प्रकार लिखा है-

एकाएक 26 जनवरी 1941 को बताया गया कि नेता जी घर से गायब हो गये हैं। 16 जनवरी को उनके घर वालों ने उन्हें अन्तिम बार देखा था। उस दिन नेता जी ने घरवालों से कहा कि आज आप लोगों का मुझसे मिलने का अन्तिम दिन है। अगले दिन से कमरे में काले पर्दे लटका दिये गये। केवल उनका एक भतीजा अर्धरात्री के बाद कमरे में जा सकता था। नेता जी को किसी वस्तु की आवश्यकता होती तो वे घंटी बजा देते तथा एक चिट लिखकर बाहररख देते। 25 जनवरी को उनके भतीजे ने बताया कि आज अर्धरात्री से उसे नहीं बुलाया गया है। अन्दर प्रकाश था। दूसरे दिन घरवालों ने एक चिट लिखकर वहां रख दी, लेकिन काफी देर तक जब चिट नहीं उठाई गई व घरवालों को संदेह हो गया, जब वे अन्दर गये तो नेता जी वहां नहीं थे। नेताजी के गायब होने से देश में भूकम्प आ गया। गान्धी जी, डा० राजेन्द्र प्रसाद तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस पर चिन्ता प्रकट की किन्तु नेताजी का कुछ पता न चला।

नेताजी के पलायन का विवरण उनके भतीजे डा० अशोक कुमार बोस के शब्दों में प्रस्तुत है- ''17 जनवरी 1941 को प्रात: छ: बजे जब कि मैं तथा मेरी पत्नी, जलपान कर रहे थे (हम लोग धनबाद में थे) तभी मैनें मेरे भाई शिशिर बोस को, मेरे पिता जी की मोटर में, अपने बंगले में घुसते देखा। उन्होंने मुझसे कहा कि वह नेताजी को बदले हुए भेस में कलकत्ता से लाए हैं। अर्धरात्री को वे कलकत्ता से निकले तथा रात भर वे जी.टी.

रोड पर गाडी दौड़ाते रहे, मेरे बंगले से एक मील पहले, उन्होंने नेताजी को उतार दिया, जिससे नौकरों को यह संदेह न हो कि (बदले भेस) नेता जी से मेरा कोई सम्बन्ध है।

मेरे भाई के आने के कुछ देर बाद एक व्यक्ति जो पठान के वेश में था हमसे मिलने घर पहुंचा। यह व्यक्ति पठान सरदार दिखाई देता था। सिर पर फौजी टोपी शेरवानी, पम्पशू तथा तंग पजामा पहने हुए था। दाढी बढी हुई थी। नेताजी ने वेश इस चतुराई से बदला था कि कोई भी उन्हें पहचान न सके। दिनभर नेता जी ने मेरे बंगले पर आराम किया। उनहें मेहमानों के कमरे में ठहराया गया, जिससे देखने वाले उन्हें अजनबी समझें।

शाम को नेताजी ने हमसे विदा ली तथा अकेले पैदल घर से चल दिये। उन्होंने नौकरों को दिखाने के लिये कहा-''मैं पास क़े अड्डे से टैक्सी ले लूंगा।'' उनके जाने के बाद मैं मेरी पत्नी तथा मेरा भाई अपनी गाड़ी से चले तथा कुछ ही दूर से हमने नेताजी को गाड़ी में बिठा लिया। हम जी.टी. रोड पर गमोह की ओर चले। गमोह से पहले जहां एकान्त था हमने सड़क पर मोटर खड़ी करदी तथा एक घंटे से अधिक समय तक बात करते रहे। क्योंकि गमोह स्टेशन पर गाडी अर्धरात्री से पहले नहीं आती थी। नेता जी ने हमें बताया कि वे पेशावर जा रहे हैं। वहां से वे काबुल रूस तथा जर्मन जायेंगे। मेरे भागने का समाचार यदि 9-10 दिन तक गुप्त रक्खा जा सके तो मैं अंग्रेजों की पकड़ से बाहर हो जाऊंगा। नेता जी के भाई तथा भाभी के अतिरिक्त उस दिन से पहले इस कार्यक्रम का किसी को पता नहीं था।

जब देहली-कालका मेल आने का समय हुआ तो हम स्टेशन को चले, उन्हें शीघ्रता से उतार दिया तथा मोटर आधा मील दूर खड़ी कर दी। ट्रेन आने के आधा घंटा बाद तक हम वहां प्रतीक्षा करते रहे, किन्तु जब हमें विश्वास हो गया कि नेताजी चले गये हैं, हम वापिस आगए। नेताजी सैकेन्ड क्लास का टिकट मंगवाकर रेल में बैठ गए।'' रात्री की यात्रा सकुशल पूर्ण हुई। सवेरा होने पर उस डिब्बे में एक फौजी सिक्ख आ बैठा। उससे बात करते समय नेताजी अपने सामने अखबार को अड़ाए रहे। रास्ते में जहां कहीं गाडी रुकती नेताजी गाड़ी से बाहर की तरफ मुंहकर लेते तथा चेहरे को अखबार से ढक लेते। 18 जनवरी को नेताजी नौ बजे पेशावर पहुंच गए। उनके सहायकों ने स्टेशन पर मोटर भेज दी, इसके द्वारा वे पूर्व निर्धारित स्थान पर पहुंच गये। नेताजी को दो दिन पेशावर ठहरना पडा।

19 जनवरी को नेताजी पठान के वेश में तथा दूसरे मित्र रहमतखां के साथ मोटर में बैठकर पेशावर से चल दिये। शहर से निकल ये लोग जमरूद वाली सडक पर गये। वहां से वे गढी नाम के छोटे से गांव में गये तथा रात्री में वहीं विश्राम किया। प्रात: दो सशस्त्र पठानों के साथ काबुल के लिये पैदल चल पडे। वे ऐसे रास्ते से चले जहां पासपोर्ट नहीं देखा जाता था। क्योंकि नेताजी पठान के वेश में थे, अत: निश्चय हुआ कि

यदि कोई पूछे तो तो भगतराम (रहमतखां) उन्हें अपना गूंगा बहरा भाई बताये। अब नेताजी गूंगे बहरे जैसा व्यवहार करने लगे। बीहड मार्ग, पहाडी प्रदेश, पठानी जूते इस कारण नेता जी को चलने में बडा कष्ट हो रहा था, फिर भी जान हथेली पर रख, शाम को भारत की सीमा पर स्थित पठानों के तीर्थ स्थान ''अद्दा शरीफ'' पहुंचे। वहां पीर बाबा मस्जिद में नेताजी ठहरे। थके होने के कारण नेताजी तुरन्त सो गये। यद्यपि नेताजी थके हुए थे, फिर भी प्रात: शीघ्र उठ, नित्यकर्म के बाद जलपान कर आगे चल पडे। गढी वाले दो सशस्त्र व्यक्ति वापिस चले गए तथा अन्य तीन व्यक्ति बन्दूक लेकर साथ चले। मार्ग कठिन होने के कारण वे कुछ ही मील चल सके तथा शाम आठ बजे ''लालपुर'' पहुंचे। यह काबुल नदी के किनारे बसा छोटा सा गांव है। यहां का खान प्रभावशाली व्यक्ति था। उसने एक पत्र लिख दिया कि रहमतखां तथा जियाउद्दीन (नेताजी) स्वतन्त्र कबीले के व्यक्ति हैं इन्हं कोई तंग न करे। ये सखी साहब की यात्रा पर जा रहे हैं। कुछ दूर चलने पर वे काबुल नदी के किनारे पहुंच गये। नदी पार करने के लिये नौका उपलब्ध न थी, अत: मशकों में हवाभर कर उनहें बांधकर नदी पार की गई। दोनों बन्दूकधारी वापिस भेज दिये गये, इस समय वे ढाका से 5 मील आगे पहुंच गए थे (स्मरण रहे यह बंगलादेश वाला ढाका नहीं है।) नदी परा कर ये सडक के पास स्थित झंडी गांव पहुंच गये। अब ये काबुल को जाने वाली गाडियों की प्रतीक्षा करने लगे। रहमतखां आने वाली प्रत्येक गाडी को रुकवाने का प्रयत्न करता था, पर कोई गाडी नहीं रुकी। अन्त में एक ट्रक जिसमें माल लदा था, ये दोनों उसकी छत पर सामान पर बैठ गये। सब जगह बर्फ पडी थी हवा बहुत ठंडी थी। पास में केवल एक-एक चद्दर थी। रास्ते में जब वृक्ष की टहनियां आती तो ये सन्दूक के ऊपर लेट जाते। गर्मी का कोई साधन न था, केवल चाय पीकर शरीर गर्म रखना पड रहा था। अगले दिन दोपहर वे ''खाक'' नामक स्थान पर पहुंचे। वहां पासपोर्ट देखा जाता था तथा गाड़ियों की तलाशी भी ली जाती थी। तलाशी के समय जब इनसे पूछताछ की गई तो रहमतखां ने कहा यह मेरा बड़ा भाई गूंगा बहरा है, मैं इसे सखी साहब की यात्रा पर ले जा रहा हूं। युक्ति काम कर गई तथा आगे उनसे किसी ने पूछताछ नहीं की।

ट्रक ने उन्हें काबुल पहुंचा दिया। वहां ठहरने का कोई प्रबन्ध न था। यदि बडे होटल में ठहरते तो पकडे जाने का भय था, अत: एक सस्ती तथा गन्दी सराय में ठहरे। एक रुपया प्रतिदिन के हिसाब से एक गन्दी कोठरी किराए पर ली। सात दिन वहीं ठहरे। एक दिन एक सफेद कपडों वाला व्यक्ति, जो सी.आई.डी का आदमी था, उनसे पूछताछ करने लगा। तुम कौन हो, कहां से आए हो, कहां कब जावोगे?। रहमतखां ने कहा- यह मेरा बडा भाई गूंगा बहरा है। यह बीमार है, मैं इसे सखी साहब की यात्रा कराने ले जा रहा हूं। बर्फ पडने के कारण रास्ता बन्द है, अत: हम यहां ठहरे है। रास्ता खुलने परचले जायेंगे। किन्तु

वह न माना और थाने में चलने के लिये जिद्द करने लगा। रहमतखां ने उसे दो रुपये (अफगानी) देकर टाला। वह तीसरे दिन आकर फिर कहने लगा कि तुम्हारी लारी अभी तक नहीं आई है। उस दिन रहमतखां ने पांच का नोट देकर टाला। अगले दिन वह फिर आया तथा कहने लगा कि कल सखी साहब की लारी आई थी तुम उसमें क्यों नहीं गये। यह लारी सप्ताह में दो दिन आती है। तब रहमतखां ने कहा–हमें पता नहीं था, कल मैं पता करके आऊंगा तथा हम सखी साहब चले जायेंगे। तब भी वह आदमी नहीं माना तथा उन्हें थाने में ले जाने की जिद करने लगा। तब रहमतखां ने उसे सतरह रुपये तथा नेताजी की घडी उसे देकर उससे पीछा छुडवाया। इस प्रकार नेताजी बड़ी कठिनाई में पड़ गये थे। यदि वे किसी और सराय में भी चले जाते तो वह वहां भी उन्हें खोज लेता। अत: निश्चय किया गया कि किसी जानकार के घर ठहरा जाये।

उस समय काबुल में एक उत्तमचन्द देशभक्त व्यापारी रहता था, यह व्यक्ति पेशावर का रहने वाला था। 1938 के राष्ट्रीय आन्दोलन में इसकी दो साल की सजा भी हुई थी। इसके चाचा रहमतखां (भगतराम) के गांव ब्याहे थे। नेताजी ने कहा आप वहां जाकर शीघ्र प्रबन्ध करें, क्योंकि इस व्यक्ति को ज्यादा नहीं टाला जा सकता। क्योंकि नेताजी के पलायन का समाचार रेडियो द्वारा सब जगह पहुंच चुका था।

रहमतखां (भगतराम) उत्तमचन्द्र के पास दुकान पर गया तथा उसने उत्तमचन्द को बताया कि नेताजी पठान के वेश में एक सराय में ठहरे हुए हैं तथा उनके पीछे एक जासूस पडा हुआ है, उनकी गिरफ्तारी कभी भी हो सकती है। क्या आप उन्हें अपने घर में ठहरा सकते हैं। उत्तमचन्द देशभक्त तथा वीर था। उसने कहा मेरा घर तो नेताजी के लिये तैय्यार है, परन्तु मेरा घर एक गन्दे मुहल्ले (हिन्दू गूजर) में स्थित एक गन्दा मकान है। तथा उसकी नीचे की मंजिल में एक किरायेदार भी रहता है। तब रहमतखां (भगतराम) नेताजी को उत्तमचन्द के उसी घर में ले आया। तब दोनों निश्चिन्त हुए। उत्तम चन्द के घर वाले जब कहीं जाते तो नेता जी के कमरे में बाहर से ताला लगा जाते जिससे किसी को शक न हो। एक दिन उत्तमचन्द की लडकी ने गलती से दरवाजा बन्द नहीं किया तथा उसी समय उनका किराएदार वहां आगया। नेताजी को उसने पहचान लिया तब वह इतना डर गया कि वह उसी दिन उत्तम चन्द के मकान को खाली करके चला गया। इस प्रकार वहां रहते हुए रहमतखां तथा नेताजी बार-बार रूसी दूतावास से सम्पर्क बनाने का प्रयत्न करते रहे। एक दिन नेताजी रूसी दूतावास के बाहर बैठ गये, जब शाम के समय रूसी राजदूत बाहर निकलने लगा तब नेताजी ने हाथ देकर उसे रोका और उससे बात करनी चाही, किन्तु भाषा न समझने के कारण बात नहीं बनी। तब लाचार होकर दोनों ने इटालवी दूतावास से सम्पर्क करने की कोशिश की और वहां के राजदूत से मिलने में सफल हुए। वहां के राजदूत ने नेताजी को सब तरह की सहायता प्रदान करने का वचन दिया।

इटालवी राजदूत ने अपने देश में यह सन्देश भेज दिया। यह जान कर इटली के अधिकारी बड़े प्रसनन हुए तथा पत्र भेजकर नेताजी को शीघ्र वहां से निकालने का आश्वासन दिया। किन्तु इटली से जब कई दिन तक कोई उत्तर नहीं आया, तब लाचार हो नेताजी को तस्करों की टोली के साथ सीमा पार भेजने की बात सोची गई तथा प्रबन्ध भी होगया था। तभी इटली के राजदूत की पत्नी एक पत्र दे गई, जिसमें लिखा था नेताजी का पासपोर्ट बन गया है तथा आपको शीघ्र ही इटली भेज दिया जायेगा। इस कार्य में देर होने का कारण रूसियों द्वारा अड़ंगा अड़ाना था। रुसी लोग नेताजी को नहीं बुलाना चाहते थे।

17 मार्च को नेता जी उत्तमचन्द की पत्नी से विदा ले, जलपान कर घर से निकले। शाम तक उत्तमचन्द के मित्र हाजी के घर ठहरे। शाम को अंधेरा होने पर बग्गी में बैठकर इटली के दूतावास के घर पहुंचे। उत्तमचन्द उनको वहां पहुंचाकर घर लौट आया। 18 मार्च को प्रात: नेताजी एक जर्मन तथा एक इटालियन के साथ कार में बैठ कर रवाना हुए। पासपोर्ट में नेताजी का नाम ''कैरेटाईन लिखा गया था। रहमतखां 20 मार्च को लारी से भारत चल दिया। नेताजी ने एक रात खुमरी पुल पर बिताई जो कि काबुल की सीमा के पास था। 21 मार्च को वे रेल द्वारा मास्कों के लिये चल दिये तथ 27 मार्च को मास्को पहुंचे। 28 मार्च को नेताजी बर्लिन (जर्मनी) में पहुंच गये। कुछ समय बाद अफगान सरकार को उत्तमचन्द के पास नेताजी के ठहरने का पता चला, तब अफगान सरकार ने उत्तमचन्द को अफगानिस्तान से निकाल दिया या तथा भारत सरकार ने उत्तमचन्द को गिरफतार करके अपनी खीज निकाली। परन्तु तब तक पक्षी उड़ चुका था। बर्लिन में नेताजी का हिटलर ने स्वागत किया तथा उनको कोठी, कार, रेडियो आदि सब सुविधाएं दीं, तब नेताजी ने बर्लिन से सर्वप्रथम भाषण ब्रांडकास्ट किया। कुछ समय बाद जापान से आजाद हिन्द सेना के संस्थापक रास बिहारी बोस की प्रार्थना पर नेताजी समुद्री यात्रा पनडुब्बी द्वारा करके जापान पहुंचे। इस यात्रा में 2-3 व्यक्ति ही नेताजी के साथ थे, जिनमें मांडोठी के कप्तान कंवलसिंह भी एक थे। जापान जाकर नेताजी ने जापानियों की सहायता से आजाद हिन्द सेना तथा सरकार की स्थापना की तथा उत्तर पूर्व में वीरतापूर्वक अंग्रेजों से युद्ध किया। किन्तु जापान के हथियार डालने पर नेताजी हवाई जहाज से मन्चूरिया (रूस) चले गए। जहां बाद में रूस सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर साईबेरिया कि कैकटस जेल में बन्द कर दिया। अनुमान किया जाता है, नेता जी की मृत्यु 1968 में इसी जेल में हुई क्योंकि नेहरू परिवार ने इसी समय तक नेताजी के परिवार की जासूसी कराई गई, ऐसा कुछसमय पहले अखबारों में छपा था। 23 जनवरी 1897 में जन्में ऐसे वीर नेताजी को शतश: नमन।

सम्पर्क सूत्र
111/19 आर्यनगर, झज्जर
मो० 9996227377

आचार्य वेदव्रत शास्त्री कर्मठ विद्वान् व्यक्तित्व

आचार्य वेदव्रत शास्त्री जी दिवंगत हो गये, यह सुनकर हृदय को एक झटका लगा। वेदव्रत शास्त्री जी से मेरा लगाव सन् 1950 से रहा जब मैं गुरुकुल झज्जर में प्रविष्ट हुवा। शास्त्री जी तब अष्टाध्यायी पढ चुके थे और मैंने पं० विश्वप्रियजी शास्त्री से अष्टाध्यायी पढना प्रारम्भ किया, किन्तु लगभग दो वर्ष की अवधि में शास्त्री जी का सहपाठी बन गया। शास्त्री जी ने अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करके पहले सुनाई और इसके बाद दूसरे नम्बर पर मैंने अष्टाध्यायी का कण्ठस्थ पाठ सुनाया।

शास्त्री जी ने गुरुकुल झज्जर की समूची पाठविधि पूरी की और गुरुकुल झज्जर के वरिष्ठ स्नातक बने। गुरुकुल झज्जर से ही आयुर्वेदाचार्य किया और वेदाविमर्श नाम से एक शोधप्रबन्ध भी लिखा, जिसके कारण उनको वाचस्पति की उपाधि मिली।

अध्ययन के साथ साथ आचार्य भगवान् देव जी (स्वामी ओमानन्द जी) ने उन्हें गुरुकुल का कार्यभार सौंपना भी प्रारम्भ कर दिया क्योंकि शास्त्री जी और यज्ञदेव जी शास्त्री ये दो ही उस समय के वरिष्ठ छात्र थे। आचार्य भगवान् देव जी ने ''सुधारक'' नाम से मासिक पत्रिका निकालनी प्रारम्भ की थी श्री वेदव्रत शास्त्री जी को उसका सम्पादक प्रबन्धक बनाया। वरिष्ठ स्नातक होने के कारण शास्त्री जी को पूज्यपाद आचार्य जी (आचार्य भगवान् देव) ने महाभाष्य के सम्पादन का कार्य सौपा जिसे शास्त्री जी ने बडी कुशलता पूर्वक सम्पादित किया और उस पर विमर्श नामक टीका भी लिखी। विद्या के क्षेत्र में शास्त्री जी आजीवन लगे रहे। काशिका वृत्ति का दो भागों में सम्पादन बडी विद्वतापूर्ण तरीके से किया। प्रकाशन के कार्य में तो वे अन्त तक लगे रहे। अभी कुछ समय पूर्व उन्होंने ''सुधारक'' पत्रिका में अपना पुराना लेख ''पं० युधिष्ठिर मीमांसक की तीन भूलें '' शीर्षक से छपवाया जो बडा सटीक और वैदुष्यपूर्ण है।

विद्वत्ता के क्षेत्र के साथ साथ शास्त्री जी अत्यन्त कर्मठ व्यक्ति रहे। पूजनीय आचार्य भगवान् देव जी (स्वामी ओमानन्द जी) ने उन्हें गुरुकुल झज्जर के अधिष्ठाता का महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपा जिसे उन्होंने बखूबी निभाया। सन् 1960 ई० के दशक में आचार्य जी अधिकतर गुरुकुल से बाहर ही रहते थे, अत: उन की अनुपस्थिति में शास्त्री जी ही गुरुकुल का कार्यक्रम देखते थे। पैंसों का हिसाब किताब भी आचार्य जी की अनुपस्थिति में शास्त्री जी ही करते थे, कभी भी एक पैसे की गडबड भी उनके कार्यकाल में देखने को नहीं मिली, इतने ईमानदार और कर्मठ व्यक्तित्व के धनी स्व० शास्त्री जी थे।

शास्त्री जी आचार्य भगवान् देव जी (स्वामी ओमानद जी) के अत्यन्त कृपापात्र रहे। किन्हीं कारणों से शास्त्री जी को गुरुकुल झज्जर जब छोडना पडा तो उन्होंने रोहतक में प्रिंटिंग प्रैस

खोलने का विचार बनाया। आचार्य जी ने इस काम में उनकी भरपूर सहायता की, दयानन्दमठ रोहतक में उन्हें कमरे दिलवाये, जिनमें अभी भी आचार्य प्रिंटिंग प्रैस चल रहा है, पैसों से भी सहायता की और गुरुकुल झज्जर का पुस्तक आदि के प्रकाशन का सारा काम शास्त्री जी को दे दिया। स्व० शास्त्री जी अत्यन्त परिश्रमी और कर्मठ तो थे ही, थोडे ही समय में प्रैस का काम जमा लिया जिसके कारण दयानन्द मठ रोहतक का आचार्य प्रिंटिंग प्रैसे आज बडे अच्छे प्रिंटिंग प्रैसों में गिना जाता है। यह था स्व० शास्त्री जी की कर्मठता का परिणाम।

शास्त्री जी हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक वर्षों तक मन्त्री और प्रधान पद को सफलतापूर्वक सुशोभित करते रहे, सभा की पत्रिका के सम्पादन के साथ-साथ अपनी निजी मासिक पत्रिका ''सर्वहितकारी'' भी निकालते रहे। गुरुकुल झज्जर के प्रधान पद को भी अनेक वर्षों तक सुशोभित किया। जीवन के अन्त तक कार्यक्षेत्र में लगे रहे।

स्व० शास्त्री जी अत्यन्त विनम्र और स्वच्छ छवि के व्यक्ति थे। दिल्ली में अनेक बार मेरे घर आते रहे। उनके निधन से मुझे व्यक्तिगत क्षति अनुभव हो रही है। प्रभु उनको यथोचित पुण्यकर्म पुनर्जन्म प्रदान करे और उनके वियोग में शोक सन्तप्त परिवार को शान्ति प्रदान करे। अपने सहपाठी मित्र की दिवंगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलि।

डा० महावीर मीमांसक

[सामान्य जनता को अपनी वाणी के जादू और लुभावने शब्दों के द्वारा मूर्ख बनाने और महत्त्वाकांक्षी और स्वार्थी राजनेताओं की वास्तविकता और दोहरे चरित्र को प्रकट करने वाली मार्मिक कहानी। यह कहानी भारत के सभी प्रान्तों के अनेक राजनेताओं पर पूर्णत: घटती है।--सम्पादक]

दैनिक भास्कर 25.3.2018 के अहा जिन्दगी से साभार उद्धत

बेवक़ूफ़...

घर में दाखिल होते ही उसके कानों में पत्नी की आवाज आई, 'आप कपड़े बदलने के पहले थोड़े समय के लिए मास्टर धर्मदास के घर हो आओ।'

सतीश राणा ने घड़ी की ओर देखा, रात के नौ बजे थे। 'शीला, मैं बहुत थका हुआ हूं। सुबह से मुख्यमंत्री के साथ-साथ घूम रहा हूं। वोट डालने में पांच दिन बाकी हैं। अगर पार्टी नहीं जीती, तो सभी प्रकार की मौज समाप्त हो जाएगी।' सतीश राणा ने जैसे चतुर शब्दों को मुंह से बाहर निकाला। कुछ पल रुककर वह बात पूरी करने के लिए फिर बोलने लगा, 'फिर तुमने बताया नहीं कि इस समय धर्मदास के घर क्यों जाऊं? भई ठीक है, उसने मरने के लिए उपवास रखा हुआ है। वह कॉलोनी के हक़ और भलाई के लिए लड़ भी रहा है, पर तू देख ही रही है कि मैं उसकी कैसे सेवा कर रहा हूं। चाहे इसमें हमारी पार्टी का ही नुक़सान हो रहा है।' यह कहते हुए सतीश अलमारी खोलकर उसमें से

नाईट सूट बाहर निकालने लगा। बात सुनकर शीला भी रसोई का काम बीच ही में छोड़कर वहां आ गई। उसने अलमारी बंद कर रहे पति की ओर इस तरह देखा जैसे किसी बात से अनजान हो, 'क्या बात है जी, आपको कुछ मालूम नहीं पड़ा।'

'किस बात का भाई!'

'कमाल है, सारे कॉलोनी में कोलाहल हो गया है और आप....?

'भई, मुझे कोलाहल कैसे सुनाई देता? मैं तो कॉलोनी में था ही नहीं। बल्कि पचास मील दूर के गांव में मुझे मुख्यमंत्री ने विशेष तौर पर बुलाया था। चाहे उनके साथ आदमी तो और भी कितने ही थे, पर मुख्यमंत्री साहब को मालूम है कि पार्टी में सबसे अच्छा वक़्ता तो मैं ही हूं। जैसे यह बात कहते हुए पत्नी के सामने सतीश राणा की गर्दन बांस के डंडे की तरह बन चुकी थी। पर यह बात वह पत्नी को इससे पहले पचास बार कह चुका था और प्रत्येक बार शीला को पति की इस बात पर सम्मान ही हुआ था।

'लो जी, मैं आपके भाषण के बारे में, स्टेज पर बोलने के बारे में थोड़ी कुछ कह रही हूं... मैं तो धर्मदास की बात कर रही थी, जिसने बच्चों के खेलने वाली जगह को, किसी बड़े होटल को अलॉट करने के विरोध में पिछले सात दिनों से आमरण भूख हड़ताल कर रखी है।'

'फिर मैं क्या करुं? पिछले पंद्रह दिनों से वह पत्नी के मुंह से धर्मदास की बातों को ही सुनता रहा था। वह धर्मदास जिसने डीडीए के विरोध में आमरण उपवास रखा हुआ था। जिसके लिए सतीश ने अपनी पत्नी को ख़ुश करने के लिए अपनी सरकार के विरुद्ध बोला भी। जबकि उसको मालूम था कि अगले चुनाव में पार्टी की जीत पर वह अकेला विधायक ही बनकर नहीं रह जाएगा, बल्कि उसको मंत्री की कुर्सी भी अवश्य मिलेगी। इसलिए वह पिछले पांच साल से मुख्यमंत्री की वाह-वाही करते आ रहा था।

'आपको नहीं मालूम, धर्मदास का आज शाम पांच बजे देहांत हो गया। आदमी ऐसी ही अनचाही मौत मर गया। पर देख लो जी, मरा तो कॉलोनी के बच्चों के लिए ही है। नहीं तो क्या आवश्यकता थी उसको? आप तो सरकार के व्यक्ति हो। मैं तो यह ही कहूंगी कि उसकी मौत को बेकार में ही नहीं भूल जाना चाहिए।' पत्नी की बात पर सतीश राणा एक बार तो चुप-सा रह गया। उसने यह तो सोचा ही नहीं था कि मास्टर धर्मदास सचमुच ही अपनी जान दे देगा।

'भई उपवास तो मैंने भी कई बार रखे, पर इसका मतलब यह नहीं होता कि व्यक्ति अपनी जान ही दे दे। सचमुच ही भूख से मर जाए। यह सारा कुछ तो लोगों को दिखाने के लिए होता है। मुझे याद है, कि अब वाली विरोधी पक्ष की सरकार थी। आमरण उपवास पर बैठने से पहले मैं अपनी किसी विशेष साथी को तैयार रखता था जो दो-तीन दिनों बाद कोई-न-कोई ऐसा बयान दे देता था, जिसके कारण मैं अपना उपवास तोड़ देता था। इस तरह करने से ठीक है, दो-तीन दिन भूखे रहने पड़ता था, पर अख़बारों में फोटो भी प्रकाशित

होती थो।' पत्नी सुनकर कुछ नहीं बोली।

सतीश ने भी राजनीति में ऐसे ही जगह नहीं बनाई। उसने एक नेता की ऐसी बागडोर पकड़ी कि फिर छोड़ी ही नहीं। नेता सरकार में मंत्री था। एक-दो सालों में ही सतीश ने नेताजी से राजनीति और नेतागिरी के सभी गुण सीख लिए थे। फिर सबसे अधिक लाभ उसको उसके बोलने का मिला। स्कूल और कॉलेज के समय तो वह स्टेज पर बोलते आया था। जब वह मंत्री के साथ स्टेज पर भाषण देता तो पंडाल में तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई देती रहती, जिससे वह मंत्री का ख़ास बन गया और पैसों की कोई कमी नहीं रही। वह मंत्री के जरिए सिफ़ारिश करके कई कठिन कार्य भी सरल बना देता। वह जब भी किसी के ग़लत कार्य ठीक कर देता तो मुंह मांगे पैसे मिल जाते। दो साल में ही कॉलोनी के इस ब्लॉक में उसने दो मंजिल का ख़ूबसूरत मकान बना लिया।

टिकट मिला तो चुनाव लड़कर विधायक बन गया। बस फिर क्या, सारी कॉलोनी में तुरंत ही उसका प्रभाव हो गया। लोग अपना काम कराने के लिए उसके पास आने लगे, पर उसने कभी भी किसी का कार्य मुफ्त में नहीं किया। काम पूरा होने पर उसकी क़ीमत लेता। मास्टर धर्मदास ने आते ही कॉलोनी में मकान बना रहे सतीश राणा के काम में थोड़ा विघ्न ज़रूर डाला। उसने ब्लॉक में आते ही सबसे पहले बिजली के खम्भे पर लगी बड़ी लाइट के बारे में एतराज़ उठाया, जो सतीश के घर के एकदम सामने थी। उसने कहा, 'भई, यह बात कैसे हुई? ठीक है वह चुनाव लड़कर विधायक बना है, पर उसको वोट तो हमारे जैसों ने ही दिया है। क्या उसका फ़र्ज नहीं होता कि वह ब्लॉक में ऐसी रोशनी का प्रबंध करे कि प्रकाश सभी घरों की ओर पड़े?'

पहली बार जब किसीने सतीश के सामने आवज़ उठाई, तो वह मास्टर धर्मदास ही था। बस फिर क्या था, उसे अपने ब्लॉक में तीन लाइटें और लगानी पड़ी थीं। धर्मदास की प्रथम जीत पर कॉलोनी वाले बहुत ख़ुश हुए। अब छोटे कार्यों के लिए उनको विधायक के पास नहीं जाना पड़ता, बल्कि वह मास्टर धर्मदास की सहायता लेने लगे थे। कितने ही छोटे-छोटे कार्य जैसे कॉलोनी में सफ़ाई, जमा हुए पानी की समस्या,नल, टूटी हुई सड़कों, बिजली के बल्ब आदि सभी समस्याएं धर्मदास के जरिए हल होने लगी।

एक दिन कॉलोनी में जब यह ख़बर आई कि बच्चों में खेलने वाले बड़े पार्क को डीडीए ने किसी होटल को अलॉट कर दिया। फिर तो उस धर्मदास की अध्यक्षता में एक मीटिंग हुई थी। वहां लोगों का जोश देखा गया। कितने ही समझदार व्यक्ति बोले। कितने ही प्रस्ताव पास किए गए। यह पार्क कॉलोनी के बाहर ही था, जहां बच्चे-युवा क्रिकेट खेलते थे।

मीटिंग ख़त्म होने पर सतीश ने सरल मार्ग से मदद करने की मंजूरी तो नहीं दी, पर इतना अवश्य कहा कि वह पूरी कोशिश करेगा। वक्त गुजरता गया और उसने कोई सहायता नहीं की।

कॉलोनी वाले मास्टर धर्मदास के साथ

मिलकर बड़े अफसरों से मिले, पर जब काम बनता नहीं दिखाई दिया, तो धर्मदास ने अगले दिन से ही आमरण अनशन (भूख हड़ताल) की घोषणा कर दी। धर्मदास के दोनों बेटों ने पिताजी को बहुत समझाया, पर उसके सामने एक ही जवाब था, 'ओह, मैं क्या डरता हूं डीडीए वालों से। कॉलोनी के सारे व्यक्ति मेरे मुंह की ओर देख रहे हैं। अगर मैं ही चुप हो गया तो सभी क्या कहेंगे?

बस फिर क्या था। अगले दिन कॉलोनी के व्यक्तियों द्वारा बैंड-बाजे और फूलों के हारों से भरा गला लेकर मास्टर धर्मदास ने उस पार्क में भूख हड़ताल शुरू कर दी, जिसको डीडीए ने होटल वालों को अलॉट कर दिया था।

दिन गर्मी के थे। पार्क के बाहर एक टेंट लगा दिया गया। पानी का एक घड़ा भर कर रख दिया गया। जमीन पर दरी बिछा दी गई। धर्मदास ने सुबह सात बजे से उपवास शुरू कर दिया। तालियां बजी, वाह-वाही हुई। भाषण दिए गए। कॉलोनी वाले दोपहर होने से पहले धर्मदास को वहां छोड़कर अपने-अपने घर चले गए। बस वहां वही रह गए, जो खास अपने थे। दोनों बहुएं और दोनों बेटे, पत्नी और आस-पड़ोस के कुछ व्यक्ति। एक दिन, दो दिन और फिर चार दिन गुजर गए। एक गर्मी, दूसरा पेट में अनाज का एक दाना नहीं गया। एकमात्र पानी से क्या होना था। वजन कम होने लगा। कमजोरी बढ़ती गई। डीडीए वालों को खबर तक नहीं पहुंची। दोनों बेटे अपना काम छोड़कर पिताजी के पास बैठे रहते। दोनों बहुएं घर संभालकर वहां आ जातीं।

पांचवे दिन किसी ने अखबार वालों को खबर कर दी। वह आए और मास्टर धर्मदास की फोटो खींचकर अगले दिन समाचार पत्रों में प्रकाशित कर दी गई। फोटो देखकर धर्मदास के पास कई राजनीतिज्ञ पहुंचे। पुलिस अफसर आए। डीडीए वाले भी पहुंचे। घर वालों-कॉलोनी वालों ने कितना कहा, पर धर्मदास ने उपवास नहीं तोड़ा। दिखाई देने के लिए सतीश भी दोनों समय आता। कितनी-कितनी देर वहां बैठा रहता। घर के लोगों को, आम जनता को विश्वास दिलाता कि वह सब कुछ ठीक कर देगा। पर न तो उसने प्रयत्न किया और न ही कुछ ठीक हुआ।

भूखे रहने से धर्मदास के शरीर की सांस समाप्त होने लगी। आवाज मद्धम हो गई। बिना सहारे उठना मुश्किल हो गया। आठ दिन गुजर जाने के बाद भी जब कुछ नहीं हुआ, तो मास्टर धर्मदास ने कहना शुरू कर दिया, 'मैं शायद नहीं रहूंगा, पर यह सब कुछ बंद नहीं होना चाहिए। मेरे बाद नम्बर लगाकर एक-एक व्यक्ति आएगा और इस जगह को खाली नहीं होने देगा। यह सिलसिला इसी तरह चलता रहेगा जब तक होटल के लिए जगह का अलॉटमेंट रद्द नहीं हो जाता।'

नौवें दिन शाम को धर्मदास ने प्राण त्याग दिए। पोस्टमार्टम के बाद धर्मदास की देह फूलों के हारों से सजाकर घर में लाई गई। कॉलोनी के लोगों का तांता लग गया। धर्मदास की कॉलोनी के लिए दी गई कुर्बानी पर सभी दुखी थे। लोगों के मुंह में धर्मदास की ही बातें थी, जो खत्म नहीं हो रही थीं। पर जब सतीश की पत्नी ने उसको घर जाने के लिए कहा तो उसको बहुत तकलीफ

हुई। अगले दिन जाना कहकर उसने जाना ही उचित समझा। पांच दिन गुजर गए। अखबारों में मास्टर धर्मदास के मर जाने की खबरे आना बंद हो गई थी, कॉलोनी की धर्मशाला में शाम को छह बजे धर्मदास को श्रद्धाजलि देने के लिए एक मीटिंग रखी गई। मीटिंग को सफल बनाने की पहल सतीश राणा ने ही की थी। उसने कॉलोनी के लोगों को आमंत्रण दिया था।

मास्टर धर्मदास की फोटो बड़ी करके स्टेज पर रखी गई थी। समाने थाली में अगरबत्ती जल रही थी। फूलों का हार डाला हुआ था। हॉल में कॉलोनी के बहुत सारे लोग एकत्रित हुए थे। मीटिंग ठीक वक्त पर शुरू हो गई थी। पहले तीन-चार भजन गाए गए। फिर कॉलोनी के एक-दो नामांकित व्यक्तियों ने धर्मदास के बारे में बोलना शुरू किया। वह सभी उसकी अच्छाइयों के गुण गाने लगे। फिर अंत में बोलने की सतीश राणा की बारी आई।

वह चुपचाप चलते हुए स्टेज पर आकर माइक के पास खड़ा हो गया। मुंह लटकाकर उसने इस तरह लंबा कर रखा था, जैसे मास्टर धर्मदास के मर जाने का दुख सबसे अधिक उस अकेले को ही था। कुछ देर चुपचाप खड़े रहकर एक नजर हाल में बैठे लोगों के चेहरों पर डाली और फिर बोलना शुरू किया, 'प्यारे साथियो, क्या बोलूं मैं मास्टर धर्मदास के लिए? क्या बताऊं मैं उनके बारे में। मुझे तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा। कैसे दुख से मैं अंदर तक भरा हुआ हूं। मन जोर-जोर से रोने को कर रहा है उस महान् हस्ती के लिए, उस महान् पुरुष के लिए, उस महान् आत्मा के लिए, जो आकाश में दिखाई देते ध्रुव तारे जैसा था, जो लोगों को प्रकाश दिखाकर अंधेरे से भरे मार्ग से बाहर निकालता है। धर्मदास इंसान नहीं बल्कि देवता था। ऐसे महान्पुरुष तो कभी सदियों में एक बार ही जन्म लेते हैं। धर्मदास लोगों के लिए लड़ते हुए अपनी कुर्बानी देकर चला गया, पर इस कुर्बानी को बेकार नहीं जाने देंगे। एक पार्क, जिसके लिए उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए, इसलिए उन्होंने हंसते हुए मौत का जाम पिया, यह काम अकेले उनका अपना तो नहीं था। अकेले उनके अपने पोतों के लिए नहीं था। बल्कि वह तो सभी के लिए था, फिर उन्होंने अकेले ही मौत को क्यों गले लगाया? है किसी के पास इसका जवाब? नहीं न...। पर... मेरे पास है। ऐसे महान् व्यक्ति, ऐसे तेजस्वी व्यक्ति इसी तरह करते हैं और शुरू से लेकर अब तक संसार में करते आए हैं। यही तो उनका बड़प्पन होता है, यही तो उनका मान होता है, जो उनके चले जाने के बाद भी इस संसार में जीवित रहता है। वह अपना शरीर अवश्य त्याग देते हैं, पर दुनिया में ऐसा प्रकाश छोड़ जाते हैं, जो हमारे जैसे लोगों का मार्गदर्शन करता रहता है। आज ऐसे महान् पुरुष के लिए मेरा दिल रो रहा है। काश! सरकार को अक्ल आई होती और उनको बचाया जा सकता? मैंने तो बहुत जोर लगाया और काम पूरा होने जैसा था, परंतु मास्टर धर्मदास जी इस संसार को छोड़कर चले गए।'

यह वाक्य कहते हुए सतीश राणा ने अपनी आवाज व हरकतें इस तरह कर ली, जैसे सचमुच ही उनका रोना निकल जाएगा। 'दोस्तो यह लड़ाई अभी समाप्त नहीं हुई। यह तो अभी शुरू हुई है। इस जंग में प्रथम शहीद मास्टर धर्मदास जी हुए। मुझे उम्मीद है कि इसके बाद सरकार के विरोध में शहादत देने वालों की कतारें लग जाएंगी, ऐसी महान् हस्ती के लिए मैं दिल से श्रद्धा के फूल समर्पित करता हूं।' हाल तालियों से गूंज उठा।

सतीश राणा का एक हाथ अभी माइक पर था वह चुपचाप खड़ा होकर तालियां बजाते हुए लोगों को देख रहा था। गूंजती हुई तालियों में माइक छोड़ने से पहले अपनों का प्रभाव देखने के लिए उसने एक बार नजर फिर हॉल में बैठे लोगों पर डालीं और माइक छोड़कर अपनी सीट पर जाने से पहले धीरे से यह शब्द उसने अपने मुंह से निकाले 'बेवकूफ।'

तालियां थी कि बजती ही जा रहीं थी, जब तक सतीश राणा स्टेज छोड़कर पुन: आकर अपनी जगह पर नहीं बैठ गया। लोगों ने देखा कि उसके तीन-चार दिन बाद ही ईटों के भरे ट्रक उस पार्क में आना शुरू हो गए थे, जिसके लिए मास्टर धर्मदास ने अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे। वह मास्टर धर्मदास, जिनकी पारी के बाद आमरण उपवास रखकर कुर्बानी देने वाला उस कॉलोनी में कोई दूसरा नहीं था।

यह सतीश राणा था जो ईटें उतारते एक ट्रक के पास पार्क में खड़ा होटल मालिक के साथ हंस-हंसकर बातें कर रहा था।

लेखक- एस० साकी

पंजाबी से अनूदित-तरनजीत सिंह बग्गा

गीता जयन्ती के नाम पर फिर वही उछल-कूद

झज्जर के जहांआरा स्टेडियम में 16 से 18 दिसम्बर 2018 तक गत वर्षों की भांति गीता जयन्ती के नाम पर वही पुराना फूहड़ प्रदर्शन करके जनता का करोड़ों रुपया नष्ट किया गया है।

मंच पर गीता की वास्तविकता न बताकर अश्लीलता के भावों से युक्त गाने, फूहड़ नृत्य करने वालों की भांति मटक-मटक कर शरीर के अंगप्रदर्शन करना, ढोल-नगाड़ों के कोलाहल में वक्ता के वाक्यों का विलीन हो जाना, गीता के नाम पर 'रेशमी जुल्फें और शरबती आखों को देखकर जीने वाला' गाना गाकर स्कूल के बच्चों को क्या शिक्षा दी जा रही थी, यह सोचना जयन्ती के आयोजकों के मन में भी नहीं आया। ऐसे कार्यक्रम को रोकना तो दूर रहा, गायक को हिमालय की चोटी से भी ऊंचा बताना, जयन्ती के स्थानीय आयोजकों की बुद्धि पर तरस खाने योग्य था। असभ्यता के प्रतीक गानों को सुनने की प्रतिक्रिया स्वरूप गुरुकुल झज्जर के छात्र जब स्टेडियम से बाहर जाने लगे तो आयोजकों ने बाहर नहीं जाने दिया। अत: विवश होकर अभद्रता को सहन करना पड़ा। यह कड़वा घूंट पीने के समान था। गीता पुस्तक को टैम्पो में रखकर झज्जर शहर में जलूस निकाला गया, यह जड़पूजा का प्रतीक है। इसके स्थान पर गीता के मर्मज्ञों का भाषण होता, गीता के कर्मप्रधान और फल की कामना न करने का उपदेश दिया जाता तो कुछ सार्थक होता।

हां! प्रथम दिन श्री गोविन्द भारद्वाज जी ने गीता के विषय में सारगर्भित उपदेश देकर गीताजयन्ती का महत्त्व अवश्य बताया। उसके पश्चात्

तो **नन छिन्दन्ति शस्त्राणि** यह श्लोक दो-तीन वक्ताओं ने बोला और कर्त्तव्य की इतिश्री समझ ली।

कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर पर अनेक दुकानें अपना सामान बेचने की लगी हुई थी, उन दुकानों में भी गीता के विषय में कुछ दिखाई नहीं दिया। इसी प्रकार झज्जर में भी अनेक प्रकार की दुकानों में अपने उत्पादनों का विक्रय हो रहा-था। गीता के नाम से उन दुकानों में कुछ नहीं था।

हरयाणा के प्रत्येक जिले में इसी प्रकार का कार्यक्रम गीता जयन्ती के नाम से किया गया। इससे गीता का तो क्या भला होना था, परन्तु इसकी आड़ में सरकार के हजारों व्यक्तियों को आर्थिक लाभ अवश्य हुआ होगा, यह सम्भावना है। इस धनप्राप्ति का उपाय प्रत्येक सरकारी अधिकारी और कर्मचारी जानता है, इसमें प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। सरकार के कार्य की पारदर्शिता की सही स्थिति ऐसे ही कार्यक्रमों की आड़ में छुप जाती है।

पूरी गीता ऐसी कोई महत्त्वपूर्ण पुस्तक नहीं है, जिसका सम्बन्ध कौरव-पाण्डवों के युद्ध से हो। युद्ध के समय जब दोनों सेनायें शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होकर आमने-सामने खड़ी हों, उस समय सात सौ श्लोकों वाली गीता का उपदेश देना हास्यास्पद प्रतीत होता है।

उस समय श्री कृष्ण जी ने कहा कि क्षत्रिय का कर्त्तव्य युद्ध करना है तथा जीवात्मा अमर है, यह मरकर पुनर्जन्म ले लेता है। इसका शोक नहीं करना चाहिये। जो क्षत्रिय अपने क्षात्र धर्म से विमुख होता है, लोक में उसकी निन्दा होती है, अत: क्षत्रिय का कर्त्तव्य है कि वह युद्ध से भागे नहीं और अपने अभीष्ट कर्म का पालन करे। यदि युद्ध में मर गया तो स्वर्ग मिलेगा जीत गया तो राज्य मिलेगा। कर्म करो, परन्तु फल की कामना मत करो। इसे सुनकर अर्जुन का मोह दूर हो गया और उसने श्री कृष्ण जी से कहा **करिष्ये वचनं तव।**

मैं आपके वचन का पालन करूंगा। बस यही है असली गीता का उपदेश। इससे अतिरिक्त गीता में जो कुछ लिखा है, वह सब प्रक्षेप है, उस लेख का युद्ध की परिस्थिति, समय आदि से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। अत: गीता जयन्ती के आयोजकों को चाहिये कि वे गीता के नाम से जनता में भ्रम की स्थिति उत्पन्न न करें।

गीता के मूल उपदेश का प्रकाशन करके इसे ही प्रचारित और प्रसारित करें। कर्म करना और फल की इच्छा न करने का गीता का उपदेश तो यजुर्वेद से लिया गया है। वेद कहता है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः।

कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो। गीता का कथन है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

तुम्हारा अधिकार कर्म करने का ही है उसके फल की कामना करना तुम्हारे अधिकार से बाहर है।

गीता जयन्ती पर हरियाणा सरकार के सूचना, जनसम्पर्क एवं भाषा विभाग की ओर से हरियाणा सरकार की ओर से 46 उपलब्धियों का पत्रक वितरित किया गया है, उसमें प्राचीन संस्कृत शिक्षा प्रणाली और इतिहास पुरातत्त्व संरक्षण की क हीं चर्चा नहीं है। क्या ये विभाग हरियाणा सरकार के नहीं हैं। इनकी उपेक्षा क्यों?

आशा है हरियाणा सरकार अपने सही कर्त्तव्य को पहचान कर जनता का धन व्यर्थ में व्यय नहीं करेगी।

-विरजानन्द दैवकरणि
मो० - 9416055702

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध आर्षपाठविधि के विशेष केन्द्र

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का

103 वां वार्षिक महोत्सव

दिनांकः- 3-4 मार्च सन् 2019

सब सज्जनों को सहर्ष सूचित किया जाता है आपके प्रिय महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का वार्षिक महोत्सव उपर्युक्त तिथियों को उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस महोत्सव पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी, विद्वान् और भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

सामवेद पारायण यज्ञ

28 फरवरी से डॉ० जगदेवसिंह वेदालंकार के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन प्रारम्भ होगा, इसकी पूर्णाहुति 4 मार्च को प्रातः 10 बजे होगी। यजमान बनने के इच्छुक सज्जन शीघ्र सम्पर्क करें तथा यज्ञ के प्रति श्रद्धा रखने वाले महानुभावों से निवेदन है कि यज्ञ हेतु घी, सामग्री, समिधा आदि प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

व्यायाम प्रदर्शन

3 मार्च को सायं 4 बजे से गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम का आकर्षक प्रदर्शन किया जायेगा, जिसमें आसन, दण्ड-बैठक, लोहे के सरिये मोड़ना, जीप रोकना तथा कमाण्डो आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

3 मार्च को सायं 8 बजे विद्यार्यसभा का वार्षिक अधिवेशन होगा।

सभी सज्जनों से नम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर महोत्सव की शोभा बढायें।

निवेदक

डॉ० योगानेन्द शास्त्री	आचार्य विजयपाल योगार्थी	चौ० पूर्णसिंह देशवाल	राजवीरसिंह आर्य
कुलपति	आचार्य	प्रधान	मन्त्री
9899847999	9416055044	8053178787	9811778655

हमारा कर्त्तव्य

स्वामी शिवानन्द सत्यार्थी, गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

मानव इस संसार में आया है कुछ कर्म विशेष करने के लिए। परन्तु वह संसार के अन्दर आकर इसकी रंगबिरंगी मनोहर चकाचौंध को देखकर अपने मुख्य लक्ष्य तथा अपने अन्य सभी आवश्यक व गौण कर्त्तव्यों जिम्मेदारियों को छोड़कर वह संसार के क्षणिक सुखद विषयों के आनन्द में लीन हो जाता है। और अपनी सुध बध भूल जाता है। यदि मानव ही मानवता से रहित पाया जाता है तो फिर वह मानव इस नरतन रूपी रत्न को पाकर व्यर्थ कोड़ी के भाव बेच देता है। ऐसा जीवन तो जीवन नहीं है। भर्तृहरि ने नीतिशतक में श्लोक के द्वारा बताया है कि–

येषां न विद्या न तापो ने दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।

अर्थ– जिसके पास न विद्या है, न तप है, न दान है, न वे ज्ञानवान् है, न विनयशील हैं, न वे गुणवान् हैं, न वे धार्मिक हैं, वे लोग इस मर्त्य लोक में पृथिवी पर भार हैं वे मनुष्य के रूप में पशुओं की तरह अपनी उदरपूर्ति करते हैं।

हर मानव समाज के सहारे पर जीवन यापन करता है। प्राचीन युग में साधु–महात्मा, योगी–तपस्वी समाज पर आश्रित थे। वे समाज का आधिकाधिक हित लाभ करते थे। आज के युग में समयानुसार साधु महात्मा भी पहले की अपेक्षा समाज पर अधिक आश्रित हैं।

अतः मानव का परम कर्त्तव्य है कि वह समाज के हित के लिए अवसर आते ही अपने आपको समर्पित कर देवे। परन्तु आज समर्पण की बड़ी भारी कमी पायी जाती है। हर मानव अपने आपको पूर्ण रूप से स्वतन्त्र रखना चाहता है। बालक का जीवन स्वतन्त्र नहीं होना चाहिए। हाँ किसी–2 कार्य में उन्हें स्वतन्त्र करने की आवश्यकता होती है जो उनके जीवन के विकास के लिए आवश्यक है। मानव जीवन में समाज, देश, ईश्वर, माता पिता और गुरुजनों के प्रति समर्पित होना आवश्यक है।

हम जब रास्ते से अपने किसी आवश्यक कार्य से जा रहे हैं हमारे सामने एक एक्सिडैण्ट हुआ व्यक्ति सडक के किनारे पड़ा हुआ तडप रहा है उसका कोई साथी संगी उसके पास नहीं है उस समय हमारा यह सबसे आवश्यक कार्य हो जाता है कि हम अपने आवश्यक कार्य को छोड़कर उस व्यक्ति को अस्पताल में ले जायें और उसका उपचार करायें और तब तक उसके पास रहें जब तक कोई दूसरा व्यक्ति उसकी सेवा में उपस्थित न हो।

हम कहीं पर यात्रा कर रहे हैं अथवा किसी गाँव या शहर या अपने गाँव में हैं तो अचानक क्या देखते है कि एक बहन की इज्जत लूटने के लिए कुछ बदमाश गुण्डे बहन को पकड़ कर ले जा रहे हैं तो वहाँ हमें यह नहीं देखना है कि मेरी शक्ति सामर्थ्य इस बहन को बचाने की है या नहीं। बल्कि वहाँ तो अपने प्राणों की बाजी लगा देनी है और इतने से ही काम नहीं चलता बल्कि बहिन को बदमाशों के हाथों से छुड़ाकर उसे सुरक्षित उसके

घर पहचाना है ऐसे अवसर पर हमारे पराक्रम बहादुरी, वीरता और साहस का पता लगता है उस समय हमारी रगों में खून खोल जाना चाहिए।

ऐसी घटना के समय यह नहीं देखा जाता है कि मैं अकेला हूँ और ये बदमाश कई हैं। बहिनों की इज्जत लूटने वाले कामी व्यक्तियों में मनोबल नहीं होता। वहाँ मनोबल की साहस की आवश्यकता होती है अकेला ही कई बदमाशों को पीछे हटा देता है।

विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थी को अपने अध्ययन में इतना निमग्न हो जाना चाहिए कि वह हर क्षण अपने जीवन निर्माण के पथ पर अग्रसर रहे। जीवन निर्माण का पथ भी तभी प्रशस्त होगा जब विद्यार्थी विद्याध्ययन के साथ-2 अपने दुर्गुणों को दूर करता जाये और गुणों को धारण करता जाये। इसके अलावा माता, पिता, गुरु, अतिथि व रोगी की सेवा करता रहे।

मानव किसी भी क्षेत्र में बढ़ना चाहता है तो उसके लिए आवश्यक है कि 24 घण्टे उसी क्षेत्र का अध्ययन चिन्तन, मनन व श्रवण करे।

मानव हर समय अपने मुख्य, गौण और अचानक आपे आवश्यक कर्त्तव्यों को पूरा करने में रत रहे उन्हीं से मानव को शान्ति की प्राप्ति होगी। किस समय हमारा कहाँ पर कितना क्या कर्त्तव्य है? जिम्मेदारी है? उसे हम पूरा करें। हम अपने हर कर्त्तव्य को जान सकें यह कोई साधारण काम नहीं है बहुत से व्यक्तियों को तो अपने कर्त्तव्यों का ही पता नहीं होता। वे फिर क्या करेंगे। और बहुत से व्यक्तियों को अपने कर्त्तव्यों की कुछ की जानकारी होते हुए भी वे आलस्यवश उन्हें नहीं करते। आलस्य वश अपने कर्त्तव्यों को छोडते जाने से मानव को धीरे-2 अपने कर्त्तव्यों का पता लगना भी बन्द हो जायेगा। और वह अपने आपको संसार के झंझटों से मुक्त अनुभव करेगा और दूसरे लोग जो अपने कर्त्तव्य में रत हैं उनके बारे में वह सोचेगा कि ये व्यर्थ ही कार्यों को करने में दु:खी हो रहे हैं इन्हें इनको करने की क्या आवश्यकता थी।

ऐसे आलसी व्यक्ति कहते है कि-

किस-2 को रोइये किस-2 को धोइये
आराम बड़ी चीज है मुँह ढ़ककर सोइये।

यदि इसी प्रकार से सभी सोच लेवें तो समाज,देश और संसार के सब काम ठप्प हो जायेंगे।

आज समाज देश तथा संसार के अन्य देशों के कार्य विधिवत् सम्पन्न क्यों नहीं होते हैं? इसका एक मुख्य कारण है-अधिकांशत: पदों पर अयोग्य व्यक्तियों को बैठाया गया है, फिर कार्य कैसे ठीक हो सकते हैं। आजकल इसी कारण से एक छोटे तहसील ब्लॉक के कार्यालय से लेकर प्रधानमन्त्री तक जहाँ-2 पर चापलूसी का बाजार गर्म है जिसका काम नियम के अनुसार नहीं होना चाहिए था, चापलूसी के कारण रिश्वत के कारण उसका कार्य अति शीघ्र हो जाता है और नियम के अनुसार जिसका कार्य हो जाना चाहिए था रिश्वत न देने के कारण तथा चापलूसी न करने के कारण उसका काम नहीं होता। पदों पर आसीन अयोग्य व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों को ही नहीं जान पाता फिर वह उन्हें करेगा कैसे? अयोग्य व्यक्तियों से देश, समाज और संसार की बड़ी भारी क्षति होती है।

वास्तव में यदि जान लिया जाये और फिर मान लिया जाये कि बिना कर्त्तव्य पालन के मानव

जीवन निरर्थक है पशु के समान हैं। मानव जीवन मिला ही कुछ कर्म विशेष करने क लिए है। कर्त्तव्य-कर्म ही पूजा है कर्त्तव्य-कर्म ही सुख शान्ति आनन्द प्रदान व सब सुखों की प्राप्ति कराने वाले हैं। इसका कारण यह है कि मानव सेवा कर्म करने से शुद्ध अन्त:करण से युक्त हो जाता है फिर वह योगसाधना रूपी कर्म से अपने आपको इस संसार से मुक्त करा लेता है। अत: हमारा जीवन सात्त्विकता, प्रभु भक्ति, सत्य, अहिंसा आदि गुणों के प्रति निष्ठा, परोपकार आदि गुणों से युक्त होगा तभी हम अपने हर कर्त्तव्य के प्रति सजग रह सकते हैं और उन्हें पूरा कर सकते हैं।

किया गया कर्म कभी खाली नहीं जाता। मानव तीन प्रकार से कर्म करता है। 1. मन से।, 2. वाणी से।, 3. शरीर से। योग दर्शन में कर्मफल के विषय में एक सूत्र है। सतिमूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा:।2।13 अर्थ-कर्म रूपी बीजों से जाति, आयु और भोग (धन सम्पत्ति आदि) तीन फल प्राप्त होते हैं। शुभकर्म रूपी रथ को मानव को हर समय हाँकते रहना चाहिए। जीवन को सार्थक बनाने के लिए समाज व देशहित के कार्य करना हमारा मुख्य कर्म है। अत: हम पहले अपने आपको जानें कि मैं क्या हूँ किसलिए इस संसार में आया हूँ और इस जीवन में मेरे लिए क्या कर्म करने अभीष्ट हैं। फिर अपने हर मुख्य गौण तथा आकस्मिक आवश्यक कर्म को जानकर उन्हें क्रमानुसार श्रद्धा, आस्था व विश्वास के साथ निष्काम भाव से करता जाये तब हम अपने कर्त्तव्यों को पूरा कर अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। अन्यथा नहीं।

''सुख दु:ख'' गुण जीव है या प्रकृति के है।

पिछले कई वर्ष से इस विषय में आर्य समाज की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में विद्वानों के लेख पढ़ने को मिले। इस विवाद का निपटारा ऋषि दयानन्द जी के साहित्य को खोज पूर्ण अध्ययन करने पर ही सम्भव है।

1) ऋषि दयानन्द जी ने वेदों का भाष्य करते समय ऋग्वेद के मंडल। सूक्त 58 मंत्र 5 के भावार्थ में सपष्ट लिखा है कि जो अन्त:करण अर्थात् श्रोत्रादि दश इन्द्रियों का प्रेरक इनका धारक और नियन्ता स्वामी, ईच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख दुख और ज्ञान आदि गुण वाला है, वह इस देह में जीव है ऐसा निश्चित जानो। ऋग्वेद मंडल 1, सूक्त 58 में जीव के स्वरूप का वर्णन है। जीव कैसा है क्या-2 गुण हैं।

2) ऋषि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्व्य में क्रम संख्या 4 पर मानते है कि इच्छा, द्वेष, सुख, दु:ख और ज्ञानादि गुण युक्त अल्पज्ञ नित्य है उसी को 'जीव' मानता हूँ। और आगे क्रम संख्या 6 पर 'अनादि पदार्थ' तीन हैं। एक ईश्वर द्वितीय जीव तीसरा प्रकृति अर्थात् जगत् का कारण इन्हीं को नित्य भी कहते हैं। जो पदार्थ नित्य हैं उनके गुण कर्म स्वभाव भी नित्य हैं।

3) ऋषि दयानन्द जी जीव के मुक्ति और बंध के वर्णन में मानते हैं कि जीव दु:ख से छुट कर सुख को प्राप्त होते और ब्रह्म में रहते हैं। इस पर

कई एक विद्वान् आपत्ति करते हैं कि जो स्वाभाविक गुण होता है वह छुटता नहीं और स्वाभाविक गुण के लिये उपदेश भी निरर्थक है। इस का समाधान इस प्रकारहै। ज्ञान को तो जीव का स्वाभाविक गुण सभी मानते हैं फिर जीव को पिछले जन्म का ज्ञान क्यों नहीं रहत्म इस का उत्तर ऋषि दयानन्द जी उपदेश मंजरी के छठे उपदेश में इस प्रकार देते हैं कि ज्ञान दो प्रकार का है स्वाभाविक और दूसरा नैमित्तिक है। स्वाभाविक ज्ञान नित्य रहता है और नैमित्तिक ज्ञान को घटती-बढ़ती, न्यूनाधिक और हानि-लाभ आदि यह प्रसंग आते रहते हैं। यह ज्ञान तीन कारणों से उत्पन्न होता है। देश काल और वस्तु। इन तीनों का जैसा-जैसा कर्मन्द्रियों के साथ सम्बन्ध होता है वैसे-वैसे संस्कार आत्मा पर होते हैं। तीनों कारणों के निकल जाने से नैमित्तिक ज्ञान का नाश हो जाता है। जीव का-मैं हूँ अर्थात् 'अपने अस्तित्व का' जो ज्ञान है वह स्वभाविक ज्ञान है।

इसी प्रकार सुख दु:ख भी जीव के गुण स्वामी दयानन्द जी ने माने है। जीव स्वतंत्र करता तथा परतंत्र भोक्ता है। जीव में सुख दु:ख स्वभाविक भी हैं और नैमित्तिक भी हैं। ..... जीव में "**भोक्तृत्व शक्ति रूप सुख दु:ख**" गुण स्वाभाविक हैं इन के बिना जीव भोक्ता नहीं हो सकता। सभी भोग सुख दु:ख के आधीन है। भोग के दो भाग है सुख व दु:ख। दूसरे नैमित्तिक सुख दु:ख जिन का नैमित्तिक जीव के अपने शुभ व अशुभ कर्म व प्रकृति है। प्रकृति और कर्मों के कारण जीव के नैमित्तिक सुख दु:ख बढ़ते घटते रहते हैं।

न्याय आर्य भाष्य 1-1-2 में की व्याख्या में आया है कि "एक विषय में दो परस्पर विरुद्ध ज्ञान नही रह सकते इस नियम के अनुसार तत्त्व ज्ञान द्वारा मिथ्याज्ञात के निवृत होने पर सकल दु:खों की निवृति से नि:श्रेयस की प्राप्ति होती है।" इस से स्पष्ट हो जाता है कि सुख दु:ख दोनों को जीव एक साथ नहीं भोक्ता। जीव के प्रयत्न व ज्ञान गुणों के अनुसार नैमित्तिक सुख दु:ख परिवर्तित होते रहते है। दु:ख के छूटने व स्वाभाविक होने में कोई बाधा नहीं।

जो सुख दु:ख को जीव के गुण मानने पर ऋषियों के व वेद शास्त्रों के उपदेश को जीव के लिये निरर्थक बताते हैं वे जीव के ज्ञान गुण के लिये क्यों नहीं मानते। यदि स्वाभाविक गुणों के लिये उपदेशों की आवश्यकता नहीं तो ज्ञान गुण तो जीव का स्वाभाविक गुण है सभी मानते है। फिर ज्ञान गुण तो जीव का स्वाभाविक गुण है सभी मानते है। फिर ज्ञान को बढ़ाने के लिये विद्यालय, अध्यापक व गुरुओं की क्या आवश्यकता है ज्ञान तो जीव का स्वाभाविक गुण है। जैसे जीव के ज्ञान गुण के लिये उपदेश की आवश्यकता है वैसे ही जीव के सुख दु:ख गुणों के लिये भी आवश्यकता है निरर्थक वहीं वेद शास्त्रों के सभी उपदेश जीव के लिये ही हैं और दु:ख छुडावे व सुख प्राप्त कराने हे तु ही है दोनो एक साथ वही होते इसलिये स्वाभाविक होने में छूटने में कोई बाधा नहीं।

स्वामी दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में लिखते हैं कि ''दु:ख के अनुभव के बिना सुख कुछ भी नहीं हो सकता''। सार यह निकला कि जीव के गुण स्वाभाविक भी हैं और नैमित्तिक भी है''। प्रकृति जड होने से व ज्ञान शून्य होने से सुख दु:ख का अधिकरण नहीं हो सकता।

सुधारक अंक 4 दिसम्बर 1997 के पृष्ट 6 पर यह दोष माना है कि अविद्या को जीव का स्वाभाविक गुण मानने पर दो जीवात्मा का मोक्ष ही संभव न हो सके गा इस का समाधान तो योग आर्य भाष्य साधनपाद सूत्र 24 की व्याख्या में इस प्रकार है कि अविद्या वासना रूप से निरन्तर वर्तमान होने के कारण अनादि है। प्रकृति पुरुष का संयोग भी अनादि है। जीवात्मा तो स्वभाव से न बंध है न मुक्त हैं अपितु स्वभाव से बन्ध और मुक्त दोनो है यदि स्वभाव से एक को ही माने तो दूसरा संभव नही हो सकता शास्त्रों में जीव को स्वभाव से दोनो प्रकार से माना है।

आगे इसी पृष्ट 6 पर है, ''सखु दु:ख को जीव की विद्यमानता को बतलाने के लिये लक्षण के रूप में रखा गया है''। जो इन 6 लक्षणों को जीव के स्वगुण नही मानते वह यह भी विचारें कि लक्षण का क्या लक्षण होता है। किसी पदार्थ को स्वशक्ति होती है वही तो उस का लक्षण है। देखने से लिंगी का ज्ञान होता है उसको अनुमान प्रमाण कहते हैं। सुख दु:ख इच्छा आदि 6 जीवात्मा के लिंग यानी लक्षण है। लिंग और लक्षण पर्याय शब्द हैं। परोक्ष पदार्थ की सिद्धि में अनुमान प्रमाण का प्रयोग होता है जो तीन प्रकार का है पूर्ववत् शेषवत् व सामान्यतादृष्ट। लिंग के प्रत्यक्ष होने पर भी लिंगी के प्रत्यक्ष न होने से लिंगलिंगी की सामान्य व्यक्ति द्वारा जिस से परोक्ष लिंगी का ज्ञान होता है उसको सामान्यतोदृष्ट कहते है। जो गुण है वह गुणी के साथ रहता है। इस प्रकार सामान्य व्यकित द्वार आत्मा की सिद्धि मे इच्छा आदि गुण सामान्यतोदृष्ट अनुमान है।

सार यह निकला कि सुख दु:ख इच्छा, द्वेष, ज्ञान और प्रयत्न जीवात्मा के स्वाभाविक व नैमित्तिक दोनों प्रकार के गुण हैं जैसे ऋषि दयानन्द जी ने ज्ञान को दो प्रकार का माना है इनही छ: लिंगो से जीवात्मा कि सिद्धि होती है इसलिए स्वभाविक हैं इन गुणों का स्वभाविक न मानने पर तो त्रेतवाद की सिद्धि भी न हो सकेगी। सुख दु:ख ाके स्वभाविक स्वशक्ति माने बिना तो जीव भोक्ता भी न होगा।

अभी तक तो किसी विद्वान् ने वेद शास्त्रों का कोई ऐसा स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया है जिस से सुख दु:ख प्रकृति के स्वाभाविक गुण सिद्ध होते हों। हमें ऋषि दयानन्द जी का आभारी होना चाहिये जिन्होंने हजारों ग्रन्थों का स्वाध्याय कर के हमारे सामने शुद्ध वेदभाष्य व स्वमन्तव्यामन्तव्य सार रूप को प्रस्तुत किया। ऋषि जी वाणी अगर रहे ओ३म् शम्।

लालचन्द आर्य
मदाना कलां (झज्जर)

5 वीं आर्य वेदप्रचार यात्रा सफलतापूर्वक सम्पन्न

हरयाणा प्रान्त मे प्रत्येक जिलेवार की जा रही आर्य वेदप्रचार यात्रा के अन्तर्गत गत चार यात्राओं की भांति यह 5 वीं वेदप्रचार यात्रा भी ईश्वरानुग्रह और आर्यसज्जनों के सहयोग से भली भांति सम्पन्न हो गई। यह यात्रा 14 दिसम्बर 2018 से 20 दिसम्बर 2018 तक की गई थी। इन ग्रामों की सूची इस प्रकार है–

14-12-18 दी सैन्चुरी स्कूल कैमला घरौण्डा, मून स्टार पब्लिक स्कूल, घरौण्डा, गांव खोराखेड़ी (घरौण्डा), 15-12-18, गांव गुढ़ा (घरौण्डा), गांव शेखपुरा (घरौण्डा), के०डी०एम०वरिष्ठ मा०विद्यालय, 16-12-18, गांव मन्चूरी (असन्ध), गांव गूलरपुर (असन्ध), गांव भाम्बरेहड़ी (असन्ध), 17-12-18, गांव-बल्ला (असन्ध), गांव मूनक (असन्ध), गांव सालवन (असन्ध), 18-12-18, गांव ब्याना (इन्द्री), गांव बदरपुर (इन्द्री), गांव नन्हेड़ा (इन्द्री), 19-12-18, इन्द्री शहर, गांव शाहपुर (इन्द्री), गांव बीबीपुर जाटान (इन्द्री), 20-12-18, जूण्डला शहर, गांव बूढनपुर, गांव दादूपुर (निसिंग)

वेदप्रचार यात्रा के प्रमुख संयोजक और संचालक, गुरुकुल झज्जर के आचार्य श्री विजयपाल जी योगार्थी ने यज्ञ से पूर्व सभी श्रोताओं को यज्ञोपवीत का महत्त्व बताकर यज्ञोपवीत प्रदान किये। तदनन्तर समाज में फैली कुरीतियों के निवारण हेतु श्रोताओं से प्रतिज्ञा कराई और दैनिक सन्ध्या, यज्ञ, व्यायाम आदि करने के लिए प्रेरित किया। स्कूल के छात्रों को ब्रह्मचर्य पालन का महत्त्व बताकर उन्हें माता-पिता-गुरुजनों की सेवा करने के लिये उत्साहित किया।

वेदप्रचार यात्रा के स्थानीय संयोजक, गुरुकुल पाणिनिकुटी नलीखुर्द के अध्यक्ष स्वामी सम्पूर्णानन्दजी सरस्वती ने अपने उद्बोधन में कहा- देश से कुरीति निवारण हेतु महर्षि दयानन्द जी ने घोर कष्ट सहन किये। उन्हें विष दिया गया, उन पर ईंटें और सांप फैंके, गंगा नदी में डुबोने का यत्न किया गया, तलवार से आक्रमण किया गया, परन्तु ईश्वर विश्वास के बल पर वे अचल और अडिग रहे। स्त्री शिक्षा का प्रचलन किया, गोरक्षा के लिये यत्न किया, वेदों का प्रचार किया, आर्ष शिक्षा का पुनरुद्धार किया। अत: आप लोग जीवन को उच्च बनाने हेतु आर्यसमाज की शरण में आओ।

स्कूल के छात्रों को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा–

आजकल विद्यार्थियों को पथभ्रष्ट करने के चार साधन हैं– फोन, टी०वी०, इण्टरनेट तथा निठल्ले और निकम्मे छात्रों की कुसंगति। इनसे बचना चाहिये। लड़के लड़कियों से मैत्री न करें, इससे बिगाड़ पैदा होता है। ईश्वर की उपासना किया करो, यज्ञ करो, स्वाध्याय करने का नियम बनाओ। दरिद्रता के नाश करने के लिये दान देना चाहिये।

इस वेद्रपचार यात्रा में श्री कुलदीप भजनोपदेशक और श्रीदलजीत आर्य ने जनता को

भजनों और धर्मोपदेश से लाभान्वित किया। करनाल वेदप्रचार यात्रा के संयोजक श्री दिलबाग आर्य घरौंडा का विशेष योगदान रहा। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित सज्जनों ने भी यथाशक्ति सहयोग दिया। ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

ग्राम केमला से- श्री जयपाल आर्य डायरेक्टर, श्रीमती कृष्णा।

घरौंडा से- श्री उमेश चुघ डायरेक्टर के०डी०एम०सी०सै० स्कूल। श्री सोमपालराणा, दिनेश शर्मा, मूनस्टार पब्लिक स्कूल।

खोरा खेड़ी से- रणजीतसिंह सरपंच। गुढा से-अमित आर्य, महासिंह आर्य। शेखपुरा से- प्रमोद आर्य, नरेन्द्र आर्य, सुभाष आर्य। मंचूरी से-सुभाष आर्य, रोहतास आर्य। भाम्बरहेड़ी से-डॉ० अजय, कृष्ण सरपंच। गुल्लरपुर से-सुबोध आर्य, रमेश आर्य, बल्ला म०द०सी०सै० स्कूल से-नरेन्द्र आर्य, वीरेन्द्र आर्य। मूनक से-महीपाल राणा, कृष्ण आर्य। सालवन से-संग्राम राणा, रोहताश राणा। ब्याना से-विपिन आर्यप्रधान। बदरपुर से-बसन्त आर्य। नन्हेड़ा से मा० धर्मराज आर्य। इन्द्री शहर से-कृष्णलाल बत्रा। शाहपुर से-सुखदेव आर्य। बीबीपुर से-धर्मपाल आर्य। बूढनपुर से-डॉ० विनोद आर्य। जूण्डला से-महावीर आर्यप्रधान, जयपाल आर्य। दादूपुर से-रमेश आर्य, रामपाल आर्य, मुकेश आर्य।

आर्यसमाज घरौंडा के प्रधान मा० जयप्रकाश आर्य और प्रतिनिधि सज्जन-श्री दिलबाग आर्य, सुभाष आर्य, राजेन्द्र फौजी, संजीव वैदिक, जयप्रकाश पुराहित, राजीव आर्यपुरोहित। इनसे अतिरिक्त अन्य सभी सहयोगियों का भी विशेष धन्यवाद जो कि गुमनाम होकर सहयोग और सेवा करते रहे हैं।

निवेदक

दिलबाग आर्य घरौण्डा : वेदप्रचार यात्रा संयोजक

मोबाईल : 9354867000

महीपाल राणा मूनक : सह संयोजक

मोबाईल : 9896761290

रामकिशन साम्भली : प्रचार सचिव

मोबाईल : 9034851416

रमेश आर्य दादूपुर : सह-संयोजक

मोबाईल : 9813827707

विपिन आर्य इन्द्री : प्रचार सचिव

मोबाईल : 9467311711

सुभाष आर्य मन्चूरी : कोषाध्यक्ष

मोबाईल : 9991661026

एवं समस्त कार्यकर्त्ता, वेद प्रचार समिति, करनाल

शोक संवेदना

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि गुरुकुल झज्जर के अध्यापक श्री नरेश कुमार आर्य बहबलपुर (जींद) निवासी के एकमात्र सुपुत्र श्री असीम का 16 वर्ष की अवस्था में दो मास की बिमारी के पश्चात् निधन होगया।

इस दारुण दुःख के समय गुरुकुल परिवार की ओर से श्री नरेश एवं उनके परिवार को इस कष्ट को सहन करने की तथा दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई।

-गुरुकुल झज्जर परिवार की ओर से

पाँचवी आर्यवेदप्रचार यात्रा की चित्रावली

करनाल जिले में वेद प्रचार यात्रा का शुभारंभ कैमरा गांव के एस.एन. हिंदू स्कूल से हुआ। इसके बाद यह यात्रा घरौंडा शहर गांव खोरा खेड़ी गुडा, शेखपुरा खालसा, घरौंडा शहर बल्ला Munak, सालवन दादूपुर, जुंडला, बूढ़पुर इंद्री, Manuchury, बयाना आदि गांव 24 गांव में पहुंची। इस अवसर पर मंजूरी गांव में वेद प्रचार यात्रा के दौरान आर्य समाज की स्थापना भी की गई। इस अवसर पर यात्रा के संयोजक दिलबाग आर्य, मास्टर जयप्रकाश, रमेश आर्य, जयपाल, उमेश, रंजीत खेड़ी सरपंच प्रदीप, नरेंद्र आर्य, वीरेंद्र आर्य, महिपाल राणा, कृष्ण आर्य, विपिन आदि मौजूद थे।

॥ ओ३म् ॥

स्वामी दयानंद सरस्वती
(आर्य समाज के संस्थापक)

शिवालिक गुरुकुल

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती
(गुरुकुल शिक्षा के विस्तारक)

भारतीय संस्कृति के साथ आपके बच्चे का उज्ज्वल भविष्य

सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम (केवल लड़कों के लिए)

प्रवेश सूचना

"शिक्षा, सुरक्षा, संस्कार और सेवा"
इन चार उद्देश्यों के साथ गुरुकुल का संचालन किया जा रहा है।

विद्यार्थी जीवन ज्ञान एवं शक्ति के संचय का काल है। यथार्थ ज्ञान के बिना किसी भी प्रकार के सुख की प्राप्ति कल्पना मात्र है। प्राचीन काल में बालक के चहुँमुखी विकास के लिए माता-पिता श्रेष्ठ गुरुओं के कुल (गुरुकुल) में अध्ययन के लिए प्रविष्ट कराते थे, जहाँ सम्पूर्ण विद्याओं का पठन-पाठन एक ही स्थान पर उपलब्ध होने से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता था। कुछ शिथिलताओं के चलते कालान्तर में इसका स्वरूप परिवर्तित होता गया। वर्तमान काल में भी यदि हम अपने बच्चों का एक ही स्थल पर सम्पूर्ण विकास करना चाहते हैं, तो वह राष्ट्रीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही संभव है। इस चिन्तन को साकार रूप देने के लिए शिवालिक शिक्षण संस्थान समूह ने ऋषियों की इस प्राचीन प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ सुरक्षा, संस्कार और सेवा इन चार उद्देश्यों को सुनियोजित कर राष्ट्र व छात्रों की सर्वोन्नति के लिए शिवालिक गुरुकुल (Shivalik Gurukul) का संचालन किया जा रहा है।

प्राचार्य : शिवालिक गुरुकुल

FEATURES

- Ultra Modern Fully Airconditioned Hostel with Stern supervision by wardens & CCTV (24x7)
- Horse Riding, Skating & Gun Shooting • Separate Coach for Games • Campus in 16 Acres
- Special Focus on Moral Values • Experienced & Dedicated Staff • Lush Green Play Ground.

Vill. Aliyaspur, P.O. Sarawan, Mullana, Ambala (Haryana) • E-mail : shivalikgurukul.ambala@gmail.com
Admission Helpline : 9671228002, 8813061212, 8901140225 • Website : www.shivalikgurukul.com

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री _____

स्थान _____

डा० _____

जिला _____

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।